Vol 6 Issue 1 July 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 1 | July - 2016

Golden Research Thoughts
International Recognition Multidisciplinary Research Journal
RNI : MAHMUL/2011/38887
ISSN No: 2231-5063
Impact Factor 2.2052 (UIF) [Yr. 2014]
3.4052 (UIF) [Yr. 2015]
4.6052 (UIF) [Yr. 2016]

GRT Golden Research Thoughts

जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

डॉ. डिगर सिंह फर्स्वाण
विभागाध्यक्ष बी.एड विभाग , देवभूमि इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन लालपुर रूद्रपुर उधम सिंह नगर उत्तराखण्ड.

सारांश–

प्रस्तुत अध्ययन में जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कुल विद्यार्थियों का अध्ययन हेतु चयन किया गया है। विद्यालयों में शालात्यागी का अर्थ बालक–बालिका का अनुतीर्ण होने से या अन्य कारणों से विद्यालय से पलायन करने से होता है। जिससे शिक्षा में अपव्यय एंव अवरोधन जैसी समस्याओं में वृद्धि होने लगती है। तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। शिक्षा के सार्वभौमीकरण को दृष्टिगत् रखते हुए सरकार तथा शिक्षा विभाग द्वारा निरन्तर बुनियादी तथा प्राथमिक शिक्षा तक सबकी पहुँच तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने की पहल की जा रही है जिससे बच्चों के भविष्य का ठोस आधार विकसित हो सके।

परन्तु कई कारणों से जैसे माता–पिता की निरक्षरता, बेरोजगारी, आर्थिक तंगी, विषम भौगोलिक परिस्थितियॉ तथा समुचित व्यवस्थाओं का अभाव होने से आज भी बुनियादी शिक्षा में शालात्यागी जैसी समस्यायें व्याप्त है जिनके समाधान किये बिना तथा गुणवत्तापरक बुनियादी शिक्षा प्रदान किये बिना राष्ट्र तथा समाज के भविष्य का ठोस आधार विकसित करना संभव नहीं है।

प्रस्तावना–

औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के प्रथम स्तर को प्राथमिक शिक्षा स्तर कहा जाता है। कोई भी राष्ट्र या समाज प्राथमिक शिक्षा के सफल संचालन के द्वारा ही अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँच सकता है। समाज एवं राष्ट्र के चहुमुखी विकास के लिए तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु प्राथमिक शिक्षा का महत्व कम करके नहीं आँका जा सकता है, क्योंकि बालक के भविष्य की दिशा प्राथमिक शिक्षा से ही निर्धारित होती है। प्रारम्भिक शिक्षा के सफल संचालन के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी कक्षा में निर्धारित आयु में नामांकित होकर निरन्तर कक्षा उत्तीर्ण करते हुए निर्धारित समय में प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कर ले जिससे विद्यार्थी गुणवत्तापरक शिक्षा प्राप्त कर सकें तथा शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन को कम किया जा सकता है।

हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करना 6 से 14 वय वर्ग के प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार माना है। प्रत्येक बच्चे को जो 6 से 14 वय वर्ग के हैं उन्हें प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने का कानूनी अधिकार प्राप्त हो गया है। परन्तु वस्तुस्थिति क्या है ? प्रारम्भिक शिक्षा की पहुंच देश में रहने वाले 6–14 वय वर्ग के प्रत्येक बच्चे तक है या नहीं ? इन सब बातों पर विचार करना व उसके प्रभावों व कारणों को जानना अत्यन्त आवश्यक है, जिससे प्रारम्भिक शिक्षा में आने वाली समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जा सके। वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा में प्रवाह आरेखण एक ज्वलन्त समस्या है। प्रवाह आरेखण के अन्तर्गत नामांकन, प्रवेश, कक्षा प्रोन्नत, कक्षा पुनरावृत्ति तथा कक्षा

शालात्यागी जैसी समस्यायें आती हैं। ये समस्यायें प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण को प्रभावित कर रहे हैं। जब तक प्राथमिक शिक्षा में 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को विद्यालयों मे नामांकित कराकर उन्हे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान नहीं की जाती तथा प्राथमिक विद्यालयों में अनुतीर्ण होने से तथा किन्हीं अन्य कारणों से बार–बार कक्षा पुनरावृत्ति एवं विद्यालय पलायन जैसी समस्याओ का निदान नहीं किया जायेगा तब तक शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करना कठिन होगा। हमारे देश की प्राथमिक शिक्षा में 'अवरोधन' की समस्या भी उतना ही विकराल है जितना कि अपव्यय। अवरोधन की समस्या प्राथमिक शिक्षा में प्रारम्भ से ही एक गम्भीर चुनौती रहा है। शिक्षा एक सतत् विकासशील प्रक्रिया है। शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में नवाचारों के अनुप्रयोग के साथ–साथ समय–समय पर अनेक शैक्षिक कार्य योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं। शिक्षा प्रत्येक बालक व बालिका का मौलिक अधिकार है। अतः समस्त शैक्षिक कार्ययोजनाओं का उद्देश्य देश के प्रत्येक बालक एवं बालिका को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना है। 6 से 14 वय वर्ग के सभी बच्चों का विद्यालयों में नामांकन व ठहराव सुनिश्चित करना और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान एवं जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों को संचालित करके निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। विद्यालय पलायन के मुख्य कारणों में एक महिलाओं का अशिक्षित होना भी है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर पुरूष रोजगार की तलाश में घर से दूर चले जाते हैं। महिला शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डा0 राधाकृष्णन आयोग (1948) ने सिफारिश की थी कि–''वहाँ शिक्षित लोग नहीं हो सकते, जहाँ शिक्षित महिलायें न हों, पलायन आज शिक्षा जगत की प्रमुख समस्या है। पलायन की समस्या का अध्ययन शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए आवश्यक है। वर्तमान समय में शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा देश के प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा का प्रचार व प्रसार किया जा रहा है। क्योंकि शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य का आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक विकास तथा सामाजिक विकास संभव है। ऐसा प्रजातांत्रिक युग के लिए अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत प्रवाह आरेखण से सम्बन्धित समस्यायें प्राथमिक शिक्षा में वैश्विक स्तर पर व्याप्त है। यह समस्या केवल भारतवर्ष की ही नहीं अपितु पूरे विश्व की समस्या हो गयी है। समाज में गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच, भाग्यवादी एवं धार्मिक दृष्टिकोण आदि समस्याओं से बच्चों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः पीढ़ी दर पीढ़ी प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण, सर्वसुलभता, एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सभी प्रयास असफल हो जाते हैं।

समस्या कथन– जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन– रैकवार (2000) के अनुसार शिक्षा में गुणवत्ता का अर्थ है मानक स्तर की शिक्षा विद्यार्थी अपनी आयु एवं कक्षा के अनुसार शिक्षा के न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त करें यह समाज की मॉग होती है। शिक्षा मनुष्य के विकास की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित हो सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में ''सभी के लिए शिक्षा'' की पुनरावृत्ति की गयी थी। इसमें जाति, धर्म, वर्ग, क्षेत्र तथा गरीबी–अमीरी के भेदभाव के बिना सभी बच्चों को क्षमता और समानता के सिद्धान्त पर आधारित शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराने का संकल्प लिया गया था। इसमें यह उल्लेख किया गया है कि देश में संचालित विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों का सघन मूल्यांकन आवश्यक है जिससे विभिन्न कार्यक्रमों की प्रगति एवं गुणवत्ता का आंकलन किया जा सकता है। प्रारम्भिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन एक भीषण समस्या है। इस समस्या के प्रति 1929 में हर्टांग समिति ने ध्यान आकृष्ट किया था। समिति ने कहा कि यद्यपि प्राथमिक विद्यालयों तथा बच्चों की संख्या में वृद्धि हुई है पर इसका अभिप्राय यह नहीं है कि प्राथमिक शिक्षा में प्रगति हो रही है आज भी कितने ही अभिभावक ऐसे हैं जो कठिन परिस्थितियों के शिकंजे में फंसे होने के कारण अपने बच्चों को प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम पूर्ण करने से पूर्व ही विद्यालयों से पृथक कर लेते हैं। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में ''मेरे विचार से जनसाधारण की अवहेलना करना महान राष्ट्रीय पाप है, और हमारे पतन के कारणों में से एक है, सब राजनीति उस समय तक विफल रहेगी जब तक भारत में जनसाधारण को एक बार फिर भली प्रकार शिक्षित नहीं कर लिया जाएगा।'' महात्मा गाँधी (1937) ने स्पष्ट कहा था कि–''करोड़ों लोगों का निरक्षर रहना भारत के लिए अभिशाप एवं पाप है। हमें इससे मुक्ति पानी ही होगी।'' महात्मा गाँधी ने वर्धा शिक्षा योजना (1937) में बुनियादी शिक्षा को अनिवार्य तथा निःशुल्क करने पर जोर दिया। उन्होंने बुनियादी शिक्षा तथा महिला शिक्षा को राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक माना।

नयाल (1985) ने शिक्षा में पलायन की समस्या का अध्ययन करने के पश्चात यह पाया कि हाईस्कूल स्तर पर पलायनवादी व्यवहार के लिए विभिन्न सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक कारक संयुक्त रूप से जिम्मेदार थे। हमारी अनाकर्षक शिक्षा व्यवस्था भी हाईस्कूल स्तर पर पलायन के लिए जिम्मेदार थी। शिक्षा एवं देश के आर्थिक विकास में उच्च धनात्मक सह सम्बन्ध पाया जाता है। उच्च साक्षरता दर वाले देशों का तीव्र गति से आर्थिक विकास होता है। शिक्षा वैयक्तिक विकास एवं राष्ट्रीय विकास परस्पर सहसम्बन्धित होते हैं। शिक्षा व्यक्ति के विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। यह जन्म से ही मानव के पारिवारिक परिवेश में अंकुरित होकर, राष्ट्रीय परिवेश में पल्लवित होते हुए वैश्विक परिवेश को अपने लक्ष्य के रूप में साधने लगती है। शिक्षा मानव की उन्नति के साथ–साथ उसकी संस्कृति के संवर्द्धन व विकास के साथ–साथ उसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित भी करती है।

कोठारी कमीशन (1964–1966) में भी शिक्षा के विभिन्न स्तरों में अपव्यय एवं अवरोधन का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि जब तक शिक्षा प्रक्रिया में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या के समाधान का सार्थक प्रयास नहीं किया जाता तब तक शिक्षा में गुणवत्ता एवं शिक्षा के सफल संचालन का प्रयास कल्पना मात्र है। कमीशन के अनुसार निम्न प्राथमिक स्तर पर बालकों में 56 प्रतिशत व बालिकाओं की शिक्षा में 62 प्रतिशत अपव्यय था। प्राथमिक स्तर पर यह अनुपात बालक एवं बालिकाओं में क्रमशः 24 प्रतिशत व 34 प्रतिशत था। इसी प्रकार उक्त कमीशन में यह स्पष्ट किया गया था कि बालकों की कक्षा 1 में अवरोधन 40.3 प्रतिशत तथा कक्षा 4 में 21.7 प्रतिशत तथा कक्षा 8 में 13.2 प्रतिशत था, इसी प्रकार बालिकाओं की शिक्षा में कक्षा 1, 4 व 8 में अवरोधन क्रमशः 47.1 प्रतिशत, 25.6 प्रतिशत् तथा 16.6 प्रतिशत था जो कि बालकों की शिक्षा की अपेक्षा अधिक था।

उत्तराखण्ड सभी के लिए शिक्षा परिषद, डी0पी0ई0पी0 III (2006) के अनुसार विद्यालय में कोहोर्ट (Cohort) का निर्माण,

Volume - 6 | Issue - 1 | July - 2016

विश्लेषण एवं उसके प्रदर्शन से उस विद्यालय की शिक्षा की गुणवत्ता की परख आसानी से की जा सकती है। परिषद द्वारा संचालित कार्यक्रमों का उद्देश्य शिक्षा हेतु सुविधाएं प्रदान करना ही नहीं है, बल्कि गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान कर विद्यार्थियों के अधिगम उपलब्धि स्तर को सुधारना भी है। शैक्षिक गुणवत्ता को किस प्रकार पाया जाय इस हेतु कोहोर्ट एक अत्यन्त महत्वपूर्ण टूल (उपकरण) है।

अध्ययन के उद्देश्य – प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किया गया है:–

जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना अध्ययन की मुख्य परिकल्पना निम्न है:–

राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन की विधि – प्रस्तुत अध्ययन की विषय सामग्री एवं प्रकृति की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए तथा अनुसंधान कार्य को पूर्ण करने के लिए प्रदत्तों का संकलन सारणीयन और उपलब्ध परिणामों के विश्लेषण हेतु सर्वेक्षण एवं वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श– अध्ययन की सुविधा के लिए जनपद पिथौरागढ़ का चयन किया गया है। जनपद पिथौरागढ़ में रहने वाले 6 से 11 वय वर्ग के सभी बच्चे तथा राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् कुल बालक एवं बालिकाओं का अध्ययन के लिए चयन किया गया है।

उपकरण तथा तकनीकें–

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श समूहों के प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर ज मान की सहायता से मध्यमान अन्तर की सार्थकता का आंकलन किया गया है इसके अलावा 0.01 एवं 0.05 स्तर पर सार्थकता स्तर का अध्ययन किया गया हें

't' परीक्षण के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया–

$$t = \frac{M1 - M2}{SED}$$

M_1= पहले न्यादर्श समूह का मध्यमान

M_2= दूसरे न्यादर्श समूह का मध्यमान

SED = मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि

$$SED = \sqrt{PQ\left[\frac{1}{N1} + \frac{1}{N2}\right]}$$

$$P = \frac{N1P1 + N2P2}{N1 + P1}$$

समस्या का सीमांकन –शिक्षा के सार्वभौमीकरण की दिशा में यह समस्या अत्यधिक व्यापक व विस्तृत है। इसमें अनेकानेक चरों का प्रभाव पड़ता है। अतः प्रस्तुत शोध समस्या का निम्न प्रकार से सीमांकन किया गया है। जनपद पिथौरागढ़ के प्राथमिक स्तर के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शालात्यागी दर का अध्ययन किया जायेगा। पिथौरागढ़ जनपद के सेवित क्षेत्र में रहने वाले 6 से 11 आयु वर्ग के कुल बालक–बालिकाओं का तथा कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् कुल बालक एवं बालिकाओं को अध्ययन के लिए चयनित किया गया है।

Volume - 6 | Issue - 1 | July - 2016

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या – जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् बालक बालिकाओं में कक्षा शालात्यागी दर का लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर ज्ञात करने हेतु शालात्यागी दर की तुलना एवं सार्थकता की जॉच t टेस्ट के द्वारा की गयी है।

तालिका संख्या–1 में जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक कुल अध्ययनरत् बच्चों तथा कक्षावार कक्षा शालात्यागी करने वाले बच्चों का विवरण दर्शाया गया है। कक्षा 1 में सबसे अधिक 245 बच्चों ने कक्षा शालात्याग किया जिनका कुल प्रतिशत 2.07 प्रतिशत था। इसी प्रकार कक्षा 2 में 181 बच्चे, कक्षा 3 में 100 बच्चे, कक्षा 4 में 212 बच्चे तथा कक्षा 5 में 100 बच्चों ने कक्षा शालात्याग किया। जिनका प्रतिशत क्रमशः 1.65, 2.07, 2.20 तथा 2.11 प्रतिशत था।

तालिका संख्या–01
कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बच्चों का विवरण

कक्षा	कुल बच्चे	शालात्यागी करने वाले कुल बच्चे	शालात्यागी दर %
1	11826	245	2.07
2	10960	181	1.65
3	10348	100	2.07
4	9629	212	2.20
5	8852	100	2.11

तालिका संख्या–2 में जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् कुल बालकों का तथा कक्षावार कक्षा शालात्याग करने वाले कुल बालकों का विवरण दर्शाया गया है। कक्षा 1 में सबसे अधिक 103 बालकों ने कक्षा शालात्याग की जिनका कुल प्रतिशत 1.84 प्रतिशत था। इसी प्रकार कक्षा 2 में 89 बालक, कक्षा 3 में 102 बालक, कक्षा 4 में 95 बालक तथा कक्षा 5 में 85 बालकों ने कक्षा शालात्याग किया। जिनका प्रतिशत क्रमशः 1.71, 2.08, 2.09 तथा 2.02 प्रतिशत था।

तालिका संख्या–02
कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालकों का विवरण

कक्षा	कुल बालक	शालात्यागी करने वाले कुल बालक	शालात्यागी दर %
1	5583	103	1.84
2	5209	89	1.71
3	4913	102	2.08
4	4552	95	2.09
5	4209	85	2.02

तालिका संख्या–3 में जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् कुल बालिकाओं का तथा कक्षावार कक्षा शालात्याग करने वाले कुल बालिकाओं का विवरण दर्शाया गया है। कक्षा 1 में सबसे अधिक 142 बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग की जिनका कुल प्रतिशत 2.27 प्रतिशत था। इसी प्रकार कक्षा 2 में 92 बालिकाऐं, कक्षा 3 में 112 बालिकाऐं, कक्षा 4 में 117 बालिकाऐं तथा कक्षा 5 में 102 बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया। जिनका प्रतिशत क्रमशः 1.60, 2.06, 2.30 तथा 2.20 प्रतिशत था।

तालिका संख्या–03
कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालिकाओं का विवरण

कक्षा	कुल बालिकायें	शालात्यागी करने वाले कुल बालिकायें	शालात्यागी दर %
1	6243	142	2.27
2	5751	92	1.60
3	5435	112	2.06
4	5077	117	2.30
5	4643	102	2.20

Volume - 6 | Issue - 1 | July - 2016

तालिका संख्या–04 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में कक्षा 1 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ ज मान 1.63 था। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 1.84 प्रतिशत बालक तथा 2.27 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्शों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 में अध्ययनरत् बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका संख्या–04
शालात्यागी दर–कक्षा–1

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	5583	1.84	2.07	97.93	0.26	1.63	सार्थक नहीं
बालिका	6243	2.27					

तालिका संख्या–05 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में कक्षा 2 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 1.95 था। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 2 में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 1.71 प्रतिशत बालक तथा 1.60 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्शों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 2 में अध्ययनरत् बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका संख्या–05
शालात्यागी दर– कक्षा–2

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	5209	1.71	1.40	98.60	0.22	1.95	सार्थक नही
बालिका	5751	1.60					

तालिका संख्या–6 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में कक्षा 3 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 0.07 था। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 3 में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 2.08 प्रतिशत बालक तथा 2.06 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 3 में अध्ययनरत् बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका संख्या–06
शालात्यागी दर– कक्षा–3

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	4913	2.08	2.07	97.93	0.28	0.07	सार्थक नही
बालिका	5435	2.06					

Volume - 6 | Issue - 1 | July - 2016

तालिका संख्या–7 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में कक्षा 4 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 0.70 था। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 4 में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में पुनरावृत्ति दर की समस्या से 2.09 प्रतिशत बालक तथा 2. 30 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 4 में अध्ययनरत् बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका संख्या–07
शालात्यागी दर– कक्षा–4

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	4552	2.09	2.20	97.80	0.30	0.70	सार्थक नही
बालिका	5077	2.30					

तालिका संख्या–8 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में कक्षा 5 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 0.60 था। राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 2.02 प्रतिशत बालक तथा 2.20 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 5 में अध्ययनरत् बालक–बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका संख्या–08
शालात्यागी दर– कक्षा–5

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	4209	2.02	2.11	97.89	0.30	0.60	सार्थक नही
बालिका	4643	2.20					

परिणाम– जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का लिंग के आधार पर अध्ययन करने पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए।

1. कक्षा 1 में 1.84 % बालकों ने तथा 2.27 % बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
2. कक्षा 2 में 1.71 % बालकों ने तथा 1.60 % बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
3. कक्षा 3 में 2.08 % बालकों ने तथा 2.06 % बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
4. कक्षा 4 में 2.09 %बालकों ने तथा 2.30 % बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
5. कक्षा 5 में 2.02 % बालकों ने तथा 2.20 % बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।

अतः कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् बालक बालिकाओं में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सुझाव– प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर शालात्यागी दर के अध्ययन के उपरान्त निम्नलिखित सुझाव समीचीन प्रतीत होते है। ये निष्कर्ष एंव सुझाव शिक्षा के योजनाकारों, प्रशासकों तथा शिक्षकों के लिए प्राथमिक शिक्षा के प्रसार तथा गुणवत्तापरक शिक्षा के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते है।

1. प्राथमिक शिक्षा में कक्षा शालात्यागी के कारणों को चिन्हित कर उनके समाधान के लिए लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए जिससे

विद्यार्थियों के लिए गुणवतापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक वातावरण सृजित किया जा सकता है जिससे बच्चे उच्च शैक्षिक उपलिब्ध स्तर को प्राप्त कर सकते है।
2 बुनियादी शिक्षा में एक कक्षा में एक से अधिक वर्ष व्यतीत करने के कारणों को पता लगाकर उसके समाधान हेतु ठोस नीति तैयार किया जा सकता है।
3 प्राथमिक शिक्षा में कक्षा शालात्यागी की समस्या के समाधान के लिए शिक्षण नवाचारों का प्रयोग कर शिक्षण को व्यावहारिक, आसान व रूचिकर बनाने का प्रयास अपेक्षित है।
4 जो विद्यार्थी अनुतीर्ण हो रहे है अथवा निम्न शैक्षिक उपलिब्ध के कारण अवसादग्रस्त है उनके मार्गदर्शन हेतु परामर्शदाता की व्यवस्था विद्यालयों में की जानी चाहिए।
5 प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एंव अवरोधन जैसी समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक कदम उठाये जाने चाहिए इस हेतु माता–पिता तथा अभिभावकों को प्रेरित करने के लिए निरन्तर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है।
6. प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाकलापो में बच्चो की समुचित भागेदारी सुनिश्चित कराकर तथा शिक्षण में खेल विधि का प्रयोग किया जाये, जिससे बच्चों में शिक्षण के प्रति रूचि तथा आत्मविश्वास में वृद्धि किया जा सके।
7. प्राथमिक शिक्षा हेतु दूरस्थ क्षेत्रों में समस्त शैक्षिक सुविधायें विकसित कर नामांकन और ठहराव में वृद्धि किया जा सकता है।
8. प्राथमिक शिक्षा में विद्यालय पलायन के कारणों का पता लगाकर उनके समाधान हेतु ठोस नीति तैयार की जानी चाहिए। जिससे विद्यालय पलायन तथा शालात्यागी दर को कम किया जा सकता है।

स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा में कक्षा शालात्यागी के होने से अपव्यय एवं अवरोधन जैसी समस्यायें व्याप्त होती हैं। जब तक प्राथमिक शिक्षा में कक्षा शालात्यागी के कारणों का पता लगाकर उन्हें दूर करने का सार्थक प्रयास नहीं किया जायेगा तब तक राष्ट्र तथा समाज के भविष्य का ठोस आधार विकसित नहीं किया जा सकता है। ऐसा प्रयास किया जाना समीचीन होगा क्योंकि राष्ट्र का भविष्य इन्हीं बालक व बालिकाओं के कन्धों पर है। जब तक सभी बालक–बालिकाओं को विद्यालयों में नामांकित कराकर उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर उनका सर्वांगींण विकास नहीं किया जाता तब तक राष्ट्र के उज्जवल भविष्य की कल्पना करना व्यर्थ ही होगा।

निष्कर्ष –

उपर्युक्त शोध अध्ययन के विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् बालक बालिकाओं में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था परन्तु यह अन्तर सांख्यकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक बालिकायें लगभग समान रूप से कक्षा शालात्यागी की समस्या से प्रभावित थे। अतः परिकल्पना सही सिद्ध होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1.रैकवार, रामगोपाल (2000) प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता स्तर की समस्या, प्राइमरी शिक्षक, अप्रैल, 12–16।
2.गुप्ता, दलजीत (1983) ''ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ नॉनफारमल एजुकेशन प्रोग्राम'' (ऐज ग्रुप 9–14) रन बाई डिफ्रेन्ट एजेन्सीज इन द स्टेट ऑफ मध्य प्रदेश पी.एच.डी. एजुकेशन, भोपाल विश्वविद्यालय ।
3.मिश्र, जयनारायण (1998) अनुदेशकों की दृष्टि में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की समस्यायें, भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाय, 15–23।
4.तोमर, लज्जाराम (1991) भारतीय शिक्षा के मूल तत्व, सुरूचि प्रकाशन केशवकुंज झण्डेवाला, नई दिल्ली, संस्करण।
5.गैरेट, एचण् ई (1981) मनोविज्ञान एंव शिक्षा में सांख्यिकी। दशम संस्करण। बी एफ एण्ड सन्स बॉम्बे।
6.नयाल, जीण् एसण् (1985) विद्यालय से पलायन के कारण भारतीय आधुनिक शिक्षा। वर्ष द्वितीय अंक चतुर्थ। एनण् सीण् ईण् आरण् टीण् नई दिल्ली।
7.उतरांचल दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (2006) विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एंव विश्लेषण। उतरांचल सभी के लिए शिक्षा परिषद डीण् पीण् ईण् पीण् – 3 देहरादून
8.पाठक, पीण् डी एंव त्यागी, जीण् एसण् डीण् (2008) भारतीय शिक्षा के आयोग कोठारी कमीशन सहित। आगरा पब्लिकेशन आगरा।
9.मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2002) सर्व शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए एक अभियान। नई दिल्ली : प्रारम्भिक शिक्षा एंव साक्षरता विभाग।

डॉ. डिगर सिंह फर्स्वाण
विभागाध्यक्ष बी.एड विभाग , देवभूमि इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन लालपुर रूद्रपुर उधम सिंह नगर उत्तराखण्ड.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org